हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
की शिक्षा संकाय में पी.एच.डी.
उपाधि की पूर्ति हेतु
पूर्व प्रस्तुतोकरण
शोध सारांश

शोध निर्देशिका

डा0 रीना पाटिल
प्राचार्या
ज्ञानोदय महाविद्यालय, इन्दौर

शोध–छात्र

रोहित केसरवानी

अध्ययन केन्द्र
शिक्षा अध्ययनशाला,(IASE)
NAAC द्वारा ^^A+ ग्रेड प्रदत्त**
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर¼म.प्र.)
2024

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय–वस्तु	पृष्ठ सं.
1.	1.0.0 प्रस्तावना	1–9
2.	1.1.0 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	9–17
3.	1.2.0 अध्ययन का औचित्य	17–20
4.	1.3.0 समस्या कथन	20
5.	1.4.0 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	20–23
6.	1.5.0 अध्ययन के उद्देश्य	23
7.	1.6.0 शोध की प्रक्रिया एवं प्रविधि	23
8.	1.7.0 शोध का सीमांकन	24
9.	1.8.0 शोध के निष्कर्ष	24–32
10.	1.9.0 शोध का शैक्षिक निहितार्थ	32–38
11.	1.10.0 भावी अध्ययन हेतु शैक्षिक सुझाव	38–39
12.	ग्रन्थ–सन्दर्भ सूची	39–43

1.0.0 प्रस्तावना

हरिशंकर परसाई हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार थे। ये हिन्दी के पहले रचनाकार थे जिन्होंने साहित्य में व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक परिस्थितिजन्य तथ्यों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करती, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के सामने खड़ी करती हैं जिनसे किसी भी व्यक्ति को अलग रह पाना लगभग असंभव है।

हरिशंकर परसाईके व्यंग्य धरातल पर कहीं नहीं मिलते हैं, उनके व्यंग्यों में बौद्धिकता के साथ–साथ मानवीय सहानुभूति एवं संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति भी निहित रहती है। जिस प्रकार कबीर के साहित्य में तिलमिलाहट पैदा करने वाली शक्ति है ठीक उसी प्रकार हरिशंकर परसाईकीरचनाओं में व्यंग्य, तीक्ष्णता और विकलता उत्पन्न करने वाली शक्ति देखी जा सकती है। बिना लाग–लपेट के अपनी बात ठेठ तथा सीधे–सादे शब्दों में व्यक्त कर देना हरिशंकर परसाईकी रचना और शिल्प की प्रमुख विशेषता है। उनकेव्यंग्यों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और उनकी प्रस्तुति भी विशिष्टता लिए हुए परिलक्षित होती है। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक प्रसंगों पर सबसे अधिक व्यंग्य लिखे हैं। राजनीति पर उनके व्यंग्य बड ही कटु और तीव्रतर प्रहार करते हैं। आज के युग में राजनेता किस कदर अपनी चाल–ढाल बदल कर अपने आपको बड़ी हस्ती के रूप में ख्याति अर्जित करते हैं।प्रत्येक परिवार, समुदाय, राज्य व देश अपने प्रत्येक सदस्य से कुछ अनिवार्य अपेक्षाएँ रखता है जैसे–वे चरित्रवान हा, अपना कर्त्तव्य जानते व समझते हों और उसका निर्वाह भी करें,साथ ही मूल्यों की कद्र तथा उन पर आधारित आचरण भी करते हों। जनकल्याण व राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है कि हम सभी इस दिशा में अपने कर्तव्य का भलीभाँति निर्वाह करें।

वर्तमान समय में जबकि शैक्षिक मूल्यों में निरन्तर ह्रास होता जा रहा है तथा शिक्षा के मूल्यों को उच्च स्तर पर लाने के अनेक प्रयास किये जा रहे हैं, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का मूल्यों के प्रति रूझान जानना तथा उसी प्रकारउनका सैद्धान्तिक व

व्यावहारिक निरूपण करना अति आवश्यक है, क्योंकि शिक्षक ही शैक्षिक मूल्यों में सुधार व प्रतिस्थापन के लिए काफी हद तक उत्तरदायी है। शिक्षा मानव के लिए सर्वांगीण विकास का सतत् माध्यम है। इस सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया की श्रृंखला में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा की कोई भी योजना हो उसके क्रियान्वयन का सूत्रधार शिक्षक ही होता है। शिक्षक शिक्षा का एक सशक्त माध्यम है जिसके सतत् प्रयास से विद्यार्थी अज्ञानता से बाहर निकल कर अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।

हरिशंकर परसाईकी व्यंगात्मक रचनाओं में सभी रचनाएं सामाजिक, शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों में हो रहे पतन को दर्शात ह। मानव सभ्यता, संस्कृति एवं शैक्षिक विकास ने जहां एक तरफ मानव के विकास को विस्तारित किया है वहीं दूसरी तरफ मानवों में अनेक अनैतिक कायों को करने से बचने के उपायों को भी प्रस्तुत किया है। आज नैतिक एवं मानवीय मूल्य का पतन इतना अधिक हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का उपयोग एक वस्तु की भांति तब तक करता है जब तक कि उसे उसकी जरूरत होती है।जरूरत खत्म होते ही प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियो को ऐसे त्याग देता है जैसे कि लोग अपने घर के कचरे को कहीं सुदूर फेंक देते हैं। हरिशंकर परसाईके विचारों से वर्तमान सामाजिक,शैक्षिक, नैतिक एवं मानवोय मूल्यों के प्रति जनसाधारण को समझना होगा और इस बात को अपने मन मस्तिश्क में उतारना होगा कि किस तरह से हम एक दूसरे की मदद करते हुए अपना जीवन सुखपूर्वक बिता सकते हैं, साथ ही दूसरे व्यक्तियों को खुशियों में शामिल भी हो सकते हैं।

हरिशंकर परसाईकी व्यंगात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों को ध्यान से समझा एवं महसूस किया जाए तो हम यह जानेंगे कि वर्तमान शिक्षा मेंइनका अनुप्रयोग करके शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार लाया जा सकता है। शिक्षा के मूल्यों को विकसित करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षा से जुड़े तमाम संस्थाओं, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ईमानदार एवं परिश्रम होना होगा। जिससे हम अपन देश के भविष्य (विद्यार्थी) में ईमानदारी, नैतिकता एवं परिश्रमी जैसे अनेकों मूल्यों का विकास आसानी से कर सकते हैं। जिस प्रकार से किसी व्यक्ति में सुधार लाने के लिए उसमें व्याप्त कमियों को उजागर करना आवश्यक होता है तभी वह व्यक्ति अपनी

कमियों को दूर कर सकता है। इसी प्रकार से हरिशंकर परसाईने शिक्षा एवं समाज के क्षेत्र में अनेकों समस्याओं को अपने व्यंग्य के माध्यम से उजागर करने का काम किया है। अब यदि इनके द्वारा बताए गए कमियों एवं समस्याओं को ध्यान में रखकर उनमें सुधार किया जाता है तो अवश्य ही हमारे समाज की शैक्षिक एवं सामाजिक व्यवस्था में सुधार हो सकेगा।

हरिशंकर परसाईने मुख्यतः राजनीतिक व सामाजिक बुराइयों पर अपने व्यंग्य किये हैं। सामाजिक व्यंग्य के क्रम में उन्होंने अपने लेखन में मानव जीवन के शैक्षिक व मानवीय मूल्यों का बेजोड़ चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय का मानव किस प्रकार से स्वयं को समाज में प्रतिस्थापित कर सकता है।उन्होंने मानव के संघर्षमय विसंगतिपूर्ण कहानी को बड़े ही सहज एवं मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने लेखन में जनसाधारण से लेकर बड़े–बड़े राजनैतिक नेता, प्रशासक, बुद्धिजीवी, मध्यवर्गीय, अध्यापक, डॉक्टर, वकील, थानेदार, पदलोलुप राजनीतिज्ञ, साहूकार, पूँजीपति, विश्व के बड़े–बड़े राष्ट्रनायक, कूटनीतिज्ञ, युद्धशास्त्री, प्रेमी–प्रेमिकाएँ, राजनैतिक और सामाजिक घटनाएँ, अपराध, अनाचार, दिशाहीनता, शोषण के अमानवोय रूपान्तर, अकाल, भुखमरी, बाढ़, युवा आक्रोश, जन–आन्दोलन, साम्प्रदायिक दंगे, धार्मिक अनाचार और इन सबसे बेखबर मध्यवर्गीय शालीनता से आक्रान्त रचनाकार और कलाकारों के साथ धार्मिक छद्म के भीतर जकड़े हुए पण्डे, पुजारी, महात्मा, भगवान, नये पंथों के संचालक और अध्यात्मवादी सभी को एक साथ लाकर खड़ा कर दिया है।

हरिशंकर परसाईका व्यक्तित्व अपने आप में बेजोड़ है। बेजोड़ भी इस सन्दर्भ में है कि जहाँ वे एक तरफ किसी व्यक्ति, परिस्थिति या समाज पर व्यंग्य कर रहे होते हैं, उस समय वे सिर्फ एक व्यंग्यकार ही नहीं होते हैं, बल्कि दूसरी तरफ परिवार के जिम्मेदार बुजुर्ग की जिम्मेदारी को भी पूरी सतर्कता से निभाने वाले अभिभावक भी हैं।

हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्य में जिन विसंगतियों पर प्रहार किया है, उनमें शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। निश्चित रूप से हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्यों के माध्यम से लागों में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के समावेश

का अच्छा प्रयास किया है।उनके अनुसार वर्तमान समाज में लोगों में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है जिसके लिए इनके व्यंग्य इन मूल्यों के संरक्षण में अहम् योगदान दे सकते हैं। आज समाज ने सामाजिक बराइयों व कुरीतियों के प्रति अपने विरोध और धिक्कार की शक्ति खो दी एवं व्यक्ति और परिस्थितियों से भयाक्रान्त होता हुआ वह निरन्तर सामूहिक भूमिका की तलाश में भटकने लगा, जो उसे सर्वथा अमानवीय और घातक परिस्थितियों से मुक्ति दिला सके। शोधकर्ता का मानना है कि बहुत ही कम साहित्यकार ऐसे हैं जिन्होंने लोगों के सामाजिक स्तर को इतन मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।हरिशंकर परसाईकी रचनाएँ लोगों में शैक्षिक व मानवीय मूल्यों के विकास में सहायक हैं।

हरिशंकर परसाईने अपनी रचनाओं में छोटे–छोटे वर्ग–चरित्रों का ऐसा व्यंग्यपूर्ण वर्णन किया है कि सहसा हमें उस विषय की गम्भीरता पर विचार करना पड़ता है। एक मध्यवर्गीय कुत्ता नामक कहानी में उन्होंने मध्यवर्गीय कुत्ते के चरित्र की तो व्याख्या की ही है, साथ में मध्यवर्गीय मालिक की भी पोल खोल दी है। इस रचना का यह मध्यवर्गीय चरित्र वास्तव में मध्यवर्गीय कुत्ते का नहीं बल्कि मध्यवर्गीय समाज का चरित्र है। यह कुत्ता उन सर्वहारा कुत्तों पर भौंकता भी है और उनकी आवाज में आवाज भी मिलाता है और कहता है कि मैं तुममें शामिल हूँ। 'उच्चवर्गीय झूठा रोष भी और संकट के आभास पर सर्वहारा के साथ भी' यह चरित्र है इस कुत्ते का।उच्चवर्गीय होने का ढोंग भी करता है और सर्वहारा के साथ मिलकर भौंकता भी है। यह मानवीय मूल्य का सबसे अच्छा उदाहारण हो सकता है।

इसी क्रम को और आगे बढ़ाते हुए उन्होंने मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में समाज में व्याप्त बुराइयों और सम्पन्न वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किये जाने वाले अत्याचार को बड़े ही कठोर शब्दों में धिक्कारा है। हरिशंकर परसाईका मानना हैं कि मनुष्य ने स्वयं ही अपनी दुर्दशा मनुष्य के द्वारा करायी है।सदियों पहले रीति–परम्परा के नाम पर जो अत्याचार निम्न वर्ग पर उच्च वर्ग करता रहा, वह आज भी अपने मूलभूत रूप में बरकरार है, जबकि आज समय बदल चुका है। हाँ, समय के साथ सब कुछ पूर्ववत् है, ऐसा भी नहीं है। बल्कि बहुत कुछ बदल गया है। सदियों का लिखा आज मिट रहा है और नये समाज का निर्माण हो रहा है। दमितहुआ व्यक्ति अब धीरे–धीरे सम्भल रहा

है। सिर उठाकर बोलने की हिम्मत कर रहा है और यह परिवर्तन निश्चय ही सुखदपूर्ण है। हाँ, इसका दूसरा पक्ष दुःखद भी कहा जा सकता है और वह भी इस रूप में कि जिन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि उनका शासन इस तरह एकाएक खत्म हो जायेगा। इनके हाथ से सब कुछ छूटता सा जा रहा है। हरिशंकर परसाईके व्यंग्यो में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य, सामाजिक पाखंडों व रूढ़िवादिता को नष्ट करने में अवश्य सिद्ध हो सकते हैं।

हरिशंकर परसाईका साहित्य

वर्ष 1947 में हरिशंकर परसाई ने जबलपुर से स्वतंत्र लेखन का कार्य शुरू किया। वहीं इसके साथ ही साप्ताहिक पत्रिका 'वुसधा' का प्रकाशन भी आरंभ किया। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से लोगों को गुदगुदाया व उनके समक्ष समाज में फैली विभिन्न प्रकार की कुरीतियों को बहुत सहजता से प्रकाशित किया। अपने साहित्य के माध्यम से हरिशंकर परसाई ने शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों पर गहरा प्रकाश डाला है। साथ हीहरिशंकर परसाईने हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हरिशंकर परसाई ने हिंदी साहित्य में 'नई कहानी आंदोलन' के दौर में कई विधाओं में साहित्य काप्रतिशिठत किया। इनमें मुख्य रूप से उपन्यास, कहानी, निबंध, व्यंग्य–लेख, आत्मकथा तथा संस्मरण इत्यादि विधाएँ सम्मिलित हैं।हरिशंकर परसाई की संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं में मुख्य इस प्रकार हैं–

- **उपन्यास**

  रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज,ज्वाला और जल

- **कहानी–संग्रह**

  हँसते हैं रोते हैं,जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, दो नाक वाले लोग

- **व्यंग्य–लेख संग्रह**

  वैष्णव की फिसलन,ठिठुरता हुआ गणतंत्र,विकलांग श्रद्धा का दौर, तिरछी

रेखाएँ, प्राइवेट कालेज का घोशणा पत्र, विकलांग राजनीति, अपनीअपनी बोमारी, मध्यमवर्गीय कुत्ता

➢ **निबंध**

सदाचार का ताबोज, शिकायत मुझे भी है, पगडंडियों का जमाना,तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, और अंत में, माटी कहे कुम्हार से, हम एक उम्र से वाकिफ हैं, अपनी अपनी बीमारी, प्रेमचंद के फटे जूते, आवारा भीड़ के खतरे, ऐसा भी सोचा जाता है, तुलसीदास चंदन घिसैं, काग भगोड़ा

➢ **आत्मकथा**

गर्दिश के दिन

➢ **संपादन**

वसुधा–साहित्यिक पत्रिका

हरिशंकर परसाईके साहित्य में आजादी के बाद का राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक परिवेश चित्रित हुआ है। किसी भी साहित्यकार पर समसामयिक घटनाओं का प्रभाव सर्वाधिक होता है। जीवन के संघर्ष विचारधारा को दिशा निर्देशित करते हैं। इनके साहित्यिक व्यंग्यों में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों की भी झलक दिखती है जो वर्तमान समय में लोगों के व्यावहारिक जीवन लिए आवश्यक है। वे वर्ग–विभक्त समाज में दूसरों का हक छीनकर सांसारिक सफलता प्राप्त करने कोअमानवीय और निकृष्ट समझते हैं। वे अमानुषिकयथास्थितिवादी एवं विकास विरोधी रूढ़ियों को उद्घाटित करते हैं। इस दृष्टि से हरिशंकर परसाईका लेखन सोद्देश्य है क्योंकि इनके के लेखन में समाज का वास्तविक परिदृश्य चित्रित हुआ है। इनके साहित्य में तात्कालिक सामाजिक, शैक्षिक एवं मानवीय स्थिति की स्पष्ट झलक प्राप्त होती है। इनके साहित्य में व्यंग्यों का स्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि इन्होनें मुख्यतया व्यंग्यों के माध्यम से ही उस समय के सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक घटनाओं पर प्रकाश डाला है,और सामाजिक परिवर्तन की बात भी कही है। इस आधार पर इनके व्यंग्यों को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है –

1. सामान्य व्यंग्य

2. विशिष्ट व्यंग्य

सामान्य व्यंग्या में वैष्णव की फिसलन,असहमत, चूहा और मैं,खेती,अश्लील पुस्तकें,रोटी,जाति, मित्रता,लड़ाई चौबेजी की, उपदेश इत्यादि हैं।

विशिष्ट व्यंग्यों में रानी नागफनी की कहानी, विकलांग श्रद्धा का दौर,प्राइवेट कॉलेज का घोषणा पत्र, सदाचार का ताबीज, विकलांग राजनीति, मध्यमवर्गीय कुत्ता, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, अपनीअपनी बीमारी इत्यादि हैं।हरिशंकर परसाई के विशिष्ट व्यंग्यो में शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों को इस रूप में दर्शाया गया है–

अपनी–अपनी बीमारी – "जो नहीं है उसे खोज लेना शोधकर्ता का काम हैं, काम जिस तरह होना चाहिए उस तरह न होने देना विशेषज्ञ का काम है, जिस बीमारी से आदमी मर रहा है उससे उसे न मरने देकर दूसरी बीमारी से मार डालना डाक्टर का काम है, अगर जनता सही रास्ते पर जा रही है, तो उसे गलत रास्ते पर ले जाना नेता का काम है, ऐसा पढ़ाना कि विद्यार्थी बाजार में सबसे अच्छे नोट्स की खोज में स्वयं ही जाएँ, प्रोफेसर का काम है।"

रानी नागफनी की कहानी– इसमें अस्तमान अपने पिताजी से कहता है कि–''पिताजी आपके कुल में विद्या की परम्परा नहीं है। आप बारह खड़ी से आगे नहीं पढ़े और पितामह भी स्याही का उपयोग केवल अंगूठा लगाने के लिए करते थे। मैंने विद्या की परम्परा डालने की कोशिश की पर मैं असफल हुआ।''वह चाहता है कि बिना पढ़े–लिखे कुछ पैसे लेकर बी.ए. की डिग्री मिल जाये। वर्तमान समय की हमारी शिक्षा व्यवस्था भी काफी दुर्नीतिग्रस्त होती जा रही है। विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय एक बौद्धिकहीनता के परिवेश में साँस ले रह ह। विद्यार्थी समूह बिना परीक्षा दिये पास होने के लिये गैर–कानूनी तरीकों का सहारा ले रहा है।"

विकलांग श्रद्धा का दौर–"श्रद्धा ग्रहण करने की भी एक विधि होती है।मुझसे सहज ढंग से अभी श्रद्धा ग्रहण नहीं होती।अटपटा जाता हूँ।अभी पार्ट टाइम श्रद्धय ही हूँ।कल दो आदमी आये। वे बात करके जब उठे तब एकने मेरे चरण छूने को हाथ बढाया।हम दोनों ही नौसिखिए। उसे चरण चूने का अभ्यास नहीं था, मुझे छुआने का। जैसा भी बना उसने चरण छ लिए।पर दूसरा आदमी दुविधा में था। वह तय नहीं कर

पा रहा था कि मेरे चरण छूए या नहीं। मैं भिखारी की तरह उसे देख रहा था।वह थोडा–सा झुका।मेरी आशा उठी।पर वह फिर सीधा हो गया।मैं बुझ गया।उसने फिर कोशिश की।थोडा झुका।मेरे पाँवो में फडकन उठी।फिर वह असफल रहा।वह नमस्ते करके ही चला गया।उसने अपने साथी से कहा होगा– तुम भी यार, कैसे टूच्चो के चरण छूते हो।"

प्राइवेट कॉलेज का घोषणा पत्र–"इस कॉलेज की स्थापना के लिए हमने एक लाख रुपए का दान किया है. यह रहस्य कम लोग ही समझेंगे कि वास्तव में हमारी सांठ गांठ से चालीस हजार ही गए हैं. साठ हजार तो इनकम टैक्स के यों भी जाते. चालीस हजार में एक लाख के दान का श्रेय खरीद लेना, हमारे पिताजी की स्मृति के अनुकूल ही हुआ।"

1.0.1 मूल्य बोध

मूल्यबोध वास्तव में मानव जीवन का दिशा–निर्देशक और अपने आप में उद्देश्य ही है। पाश्चात्य और भारतीय दार्शनिकों ने तत्सम्बन्धी कई विचार प्रकट किए हैं।प्रसिद्ध समाजशास्त्री वुड्स के अनुसार "मूल्य बोध दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करने के सामान्य सिद्धान्त है। मूल्य बोध न केवल मानव–व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं बल्कि वे अपने आप से आदर्श और उद्देश्य भीहै।"रामधारी सिंह दिनकर भी मूल्यों को आचरण के परिप्रेक्ष्य में ही महत्वपूर्ण स्वीकारते हुए लिखते हैं– "मूल्य आचरण के सिद्धान्तों को कहते है। मूल्य वे मान्यताएँ हैं, जिन्हें मार्ग–दर्शक ज्योति मानकर सभ्यता चलती रही है और जिनकी उपेक्षा करने वालों को समाज अनैतिक, और बागी कहता है। मूल्यों की सार्थकता उसके देश–काल और युगीन परिस्थितियों में ही निहित होती है।" डॉ. बैजनाथ सिंह लिखते हैं– "प्रत्येक उपलब्धि जीवन को प्रभावित करती है। उपलब्धि का यह प्रभावशाली सूक्ष्म रूप ही मूल्य बोध है। मूल्य तभी तक मूल्य रहता हैं यदि उनका अनुपालन औचित्य की सीमाओं का उल्लंघन न करके उनके मर्म की रक्षा करते हुए किया जाए।

1.0.2 शैक्षिक मूल्य

शैक्षिक मूल्य ऐसी क्रियाएँ जो शिक्षा क्षेत्र में उपयोगी होती हैं। उनका निश्चित रूप से कुछ मूल्य अवश्य होता है। उदाहरण के लिए पाठ्यक्रम का चयन, शिक्षण विधि का प्रयोग, अनुशासन पालन के नियम आदि क्रियाएँ उपयोगी साबित होती हैं। शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों मिलकर वस्तुतः उपयोगिता की दृष्टि से जो सृजन कार्यों को करते हैं, वे ही शैक्षिक मूल्य कहलाते हैं।

1.0.3 मानवीय मूल्य

मानवीय मूल्य वे अनुभव हैं जो हमें वातावरण के प्रति वह करने के लिए प्रेरित करते हैं जो हमारे लिए उपयुक्त होता है और इनके आधार पर सौहार्द्रपूण वातावरण का निर्माण होता है।मानवीय मूल्य हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और परिभाषित करते हैं कि हम जीवन में कैसे कार्य करते हैं। ये मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये हमें बनाते हैं और जीवन में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हमारे द्वारा धारण किए गए मूल्य यह निर्धारित करते हैं कि हम क्या बनना चाहते हैं, साथ ही हम अपना जीवन कैसे जीते हैं और हम रोजमर्रा के आधार पर क्या निर्णय लेते हैं। इन मूल्यों के बिना, हमारा जीवन अस्त–व्यस्त हो जाएगा और हम जो कुछ भी करते हैं या कहते हैं उसके पीछे कोई अर्थ नहीं होगा।

हरिशंकर परसाईने अपने व्यग्य के माध्यम से शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों पर गहरा प्रकाश डाला है। उनकी रचनाएँ समाज के प्रत्येक व्यक्ति में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के विकास में अपनी अहम् भूमिका निभाती हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो वर्तमान समय में समाज में शैक्षिक व मानवीय मूल्यों के विकास में इनकी रचनाएँ बहुत सीमा तक सहायक हैं। इन्हीं बातों के दृष्टिगत शोधकर्ता ने इसी बिंदु पर अपना शोध कार्य किया हैं तथा यह जानने का प्रयास किया है कि हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यरचनाएँ आम जनमानस के अन्दर शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों को समाहित करने में कहाँ तक सफल हुई हैं ।

1.1.0 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

त्यागी(2005)ने अपने शोध ″हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य का शैलीभाषिक अध्ययन″ विशय पर किया।इसमें व्यक्ति के वाणी एवं कर्म में शैलीभाषिकता का

अध्ययन करना था।इस शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि लोगों को अपने वाणी पर नियंत्रण एवं कर्मों पर विश्वास करना चाहिए।

पाण्डेय (2012) ने "हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबंधों में वैचारिकता और संरचनागत विन्यास एक अध्ययन" विषय पर अपना शोध कार्य किया जिसका उद्देश्य था कि समाज में वैचारिकता और संरचनागत विन्यास में व्यंग्य की भूमिका।इसमे यह बतलाया गया कि समाज तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में व्यंग्य सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सिंह (2012) ने "हरिशंकर परसाई का साहित्य समग्र अनुशीलन" विषय पर शोध कार्य किया जिसका उद्देश्य था कि–साहित्य हमारे समाज के विकास में कहाँ तक सहायक है। शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है तथा समाज के उत्थान में इसकी भूमिका अहम् है।

गौतम (2013) ने अपने शोध शीर्षक "स्वातंत्रयात्तर राजनीतिक परिदृश्य और हरिशंकर परसाई का सहित्य" पर अपना शोध कार्य किया जिसका उद्देश्य था वर्तमान समय में राजनीतिक परिदृश्य का वातावरण बहुत ही कलुषित हो गया है, क्या हरिशंकर परसाई के साहित्य इस समस्या के उन्मूलन में सहायक हो सकते हैं। इसमें यह दर्शाया गया कि हरिशंकर परसाईका व्यंग्य साहित्य इस समस्या के निराकरण में उपयोगी है।

लाल (2014) ने "हरिशंकर परसाई का यथार्थवाद" विषय पर अपना शोध प्रस्तुत किया शोध का उद्देश्य हरिशंकर परसाईके यथार्थवाद का वर्तमान समय में प्रासंगिकता का अध्ययन करना था जिसके निष्कर्ष में प्राप्त हुआ की इनका यथार्थवाद मानवजीवन में आज भी प्रासंगिक है।

परमार (2014) ने "हरिशकर परसाई का व्यंग्य एक अध्ययन"विषय पर अपने शोध अध्ययन किया जिसके उद्देश्य निम्न थे – इनके व्यंग्य मानवीय चेतना जगाने में सहायक हैं तथा ये सामाजिक विकास में भी सहायक हैं। इस शोध के परिणाम में प्राप्त हुआ कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य मानवीय चेतना तथा सामाजिक विकास में सकारात्मक योगदान देते हैं।

मौसमी (2015) ने अपने शोध "हरिशंकर परसाई का निबंध साहित्य और स्वातंत्र्योत्तरभारतीय यथार्थ एक आलोचनात्मक अध्ययन" विषय पर कियाजिसका उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाईका निबंध साहित्य सामाजिक एवं धार्मिक कर्मकांड, रूढीवादिता और साम्प्रदायिकता को मिटाने में सक्षम है। निष्कर्ष में यह ज्ञात हुआ कि हरिशंकर परसाईका निबंध साहित्य उपर्युक्त समस्याओं के उन्मूलन में सहायक सिद्ध हो सकता है।

कुमार (2015) ने अपने शोध शीर्षक "हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल के साहित्य में अभिव्यक्ति" पर शोध कार्य किया इस शोध का उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाई और श्री लाल शुक्ल की रचनाएँ क्या मनुष्य की अभिव्यक्ति के विकास में योगदान करती है। परिणामस्वरुप यह प्राप्त हुआ कि हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल की रचनाएँ मानव की अभिव्यक्ति में सकारात्मक योगदान करती हैं।

गोयल (2015) ने "हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी की व्यंग्य दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" शोध प्रबंध मेंशोध किया जिसका उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी के व्यंग्य मानव जीवन मूल्यों के विकास में उपयोगी हैं। यहा यह प्राप्त हुआ कि दोनों के व्यंग्य मानव जीवन मूल्यों के विकास में सकारात्मक योगदान देते हैं।

वर्मा (2016) ने "हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप" पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि वर्तमान समय में मनुष्य की व्यस्तता भरी जिंदगी में क्षरण हो रहे मूल्यों में इनके व्यंग्यों की प्रासंगिकताअध्ययन के अन्तर्गत यह दर्शाया गया है कि आज की घनीभूत विसंगतियों के परिवेश में व्यंग्य ही एक कारगर हथियार के रूप में अपनो महत्ता एवं लोकप्रियता को भी सिद्ध करता हुआ विकसित हो रहा है। आज की राजनीतिक आपाधापी, कुर्सी के पीछे अंधी दौड़, चारित्रिक पतन, मूल्यहीनता, सामाजिक एवं मानवीय गुणों का ह्रास, शोषण, अन्याय, घिनौनी वृत्तियों, प्रवृत्तियों, त्रासदी और सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक मूल्यों में गिरावट, दोगलापन आदि के कारण व्यंग्य लेखन की अनिवार्यता और उपयोगिता बढ़ती जा रही है।

सिंह (2017) ने अपने शोध शीर्षक "हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में संघर्ष चेतना" में लोगों के जीवन में श्रम एवं संघर्ष की चेतना का अध्ययन किया। शोध के निष्कर्ष में

प्राप्त हुआ कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य मानव जीवन को सार्थक बनाने में सहायक हैं।

कुमार (2017) ने "हरिशंकर परसाई की व्यंग्य निबंधों की साहित्यिक विशेषता" पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि वर्तमान समय में हरिशंकर परसाईके व्यंग्यों में निहित मूल्य आधुनिक समय में सामाजिक समस्याओं के निराकरण में सहायक हैं। अध्ययन के अन्तर्गत में बताया गया है कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य साहित्य में चित्रित विसंगतियाँ न केवल तत्कालीन समाज का नासूर थी बल्कि समकालीन समाज में भी ये समस्याएँ मुँह बाए खड़ी हैं। हरिशंकर परसाईने अपने समय की समस्त समस्याओं को अपने साहित्य में वर्णित करने का अतुलनीय प्रयास ही नहीं किया है बल्कि उन समस्याओं के समाधान को भी प्रस्तुत किया है।

पासी (2017) ने "हरिशंकर परसाई की व्यंग्य साहित्य में युग चेतना" पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाईके कथा–साहित्य के रूप में कहानी, उपन्यास, निबन्ध, रेखाचित्रइत्यादि सामाजिक विसंगतियों को दूर करने में सहायक हैं। निष्कर्ष में पाया गया कि हरिशंकर परसाईने अपने कथा – साहित्य के रूप में कहानी, उपन्यास, निबन्ध, रेखाचित्रएवंस्तम्भ लेखन में समाज में निहित विसंगतियों का व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। अतः हरिशंकर परसाईमानव–समाज को बेहतर बनाने वाली राजनीति से जुड़े व्यंग्यकार है ।

देवी (2017)ने "हरिशंकर परसाई का कृतित्व व्यग्य चेतना और शिल्प विधान" विषय पर शोध किया। शोध के उद्देश्य के अंतर्गत हरिशंकर परसाईके व्यंग्यों में मानव चेतना के विकास का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य वर्तमान समय में मानव चेतना जागृत करने में उपयोगी हैं।

सिंह (2017)ने "व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई और उनका रचना क्रम"पर शोध किया। जिसका उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाईकी रचनाओं का मानव जीवन एवं उसके मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है।शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि हरिशंकर परसाईकी रचनाएँ मनुष्य के जीवन मूल्यों के विकास में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

मिश्र(2018) ने हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी की व्यंग्य यात्रा पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि वर्तमान समय में हरिशंकर परसाईएवं शरद जोशी के व्यंग्य राजनीतिक तथा सामाजिक उत्थान में सहायक हैं।अध्ययन के निष्कर्ष में बतलाया गया है कि हरिशंकर परसाई की समूचे व्यंग्य में राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में विशेष ख्याति है। हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंग्य के माध्यम से जीवन के विविध क्षेत्रों में विषमता, हीनता, दोष, असंगति, व्यभिचार, आडम्बर आदि पर प्रहार किया है।

गंभीरे (2018) ने हरिशंकर परसाई की निबंधों में समाज एवं धर्म विषयक व्यंग्य पर अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि वर्तमान समय में हरिशंकर परसाईके निबंध धार्मिक तथा बाह्य आडम्बरों का विरोध करते हैं। अध्ययन मे यह दर्शाया गया कि हरिशंकर परसाई ने हिन्दू, इस्लामी एवं ईसाई धर्म एवं उसम निहित कानूनों के साथ–साथ कालबाह्य धार्मिक बातों पर तथा नकली साधू, झूठे, स्वार्थी पण्डित तथा धार्मिक आडम्बर, कर्मकाण्ड, धर्म के नाम पर अनाचार करने वाले पोंगा पण्डित पर साहित्य के माध्यम से तीक्ष्ण व्यंग्य किया है।

परमार (2018)ने "शरद जोशी के साहित्य में जन चेतना" विषय पर शोध कार्य किया।अध्ययन का उद्देश्य था कि शरद जोशी के साहित्य द्वारा जन चेतना का विकास करना।शोध में विश्लेष्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शरद जोशी का साहित्य समाज के लोगों में जन चेतना जगाने में सहायक है।उनके बीच जन चेतना का विकास करके समाज में फैली बुराइयों को दूर किया जा सकता है।

कुमार (2019) ने "मानवीय संवेदनाओं के आलोक में शिवराज विजय की सांस्कृतिक मीमांसा" विषय पर शोध कार्य किया।अध्ययन का उद्देश्य था कि शिवराज विजय की सांस्कृतिक मीमांसा का आम जनमानस के नैतिक एवं मानवीय मूल्यों पर प्रभाव।शोध अध्ययन में समीक्षात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शिवराज विजय की सांस्कृतिक मीमांसा लोगों के अन्दर मानवीय तथा नैतिक मूल्यों के विकास में कारगर है।

देवालिया (2020) ने अपना शोध प्रबंध "हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व"

विशय पर किया। इस शोध प्रबंध का उद्देश्य हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व का वर्तमान समय के लोगों के जीवन में उपादेयता का अध्ययन करना था। शोध के निष्कर्ष में यह प्राप्त हुआ कि आधुनिक समाज तथा व्यक्तियो के लिए हरिशंकर परसाईके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुसरण आवश्यक है।

तम्बोली (2020) ने "ज्ञानचतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया।अध्ययन का उद्देश्य था कि ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य समाज की विसंगतियों एवं अव्यवस्थाओं पर तीव्र व मार्मिक प्रहार करता है।शोध में समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य समाज की विसंगतियों एवं अव्यवस्थाओं को उजागर करता है तथा समाज में रह रहे दबे–कुचले व्यक्तियों के जीवन को अभिशाप बताता है उनका मानना है कि समाज में शोशित हुए लोगों के उत्थान के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आगे आना चाहिए।

सिंह (2021) ने "सामाजिकसरकारों में हरिशंकर परसाई के हास्य व्यंग्य साहित्य का अनुशीलन" विषय पर शोध कार्य किया गया जिसका उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाईकी रचनाओं तथा व्यंग्यों के द्वारा सामाजिक चेतना व परिवर्तन लाया जा सकेगा। शोध के निष्कर्ष में यह पता चलता है कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य सामाजिक परिवर्तन में सहायक हैं तथा इनके द्वारा सामाजिक विकास किया जा सकता है।

देवी (2021) ने "हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन" विषय पर अपना शोध प्रस्तुत किया जिसका उद्देश्य यह था कि व्यंग्य साहित्य के द्वारा मानव में मानवीय तथा नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है या नहीं।निष्कर्ष में यह ज्ञात होता है कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य साहित्य मानव में नैतिक गुणों अर्थात ईमानदारी ,परोपकार ,दयालुता आदि का विकास करते हैं साथ ही साथ उनमें सामाजिकता का भी समावेश करते हैं।

कुमार (2021) ने अपने शोध प्रबन्ध "स्वाधीन भारत का सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ और हरिशंकर परसाई का साहित्य" पर अध्ययन किया था।इसका उद्देश्य यह था कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ का

वर्तमान सामाजिक जीवन में प्रासंगिकता। शोध के निष्कर्ष में यह ज्ञात हुआ कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य साहित्य में समाहित सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ आधुनिक मानव जीवन में उपयोगी है।

मिश्र (2021) ने "पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी क साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि गुलेरी जी का साहित्य आधुनिक समाज के उत्थान में किस सीमा तक सहायक है। शोध में समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी का साहित्य आधुनिक समाज में फैले आडम्बरों व कुरीतियों के उन्मूलन में सहायक है।

सोनकर (2021) ने "हिंदी व्यंग्य परंपरा और शरद जोशी" विषय परशोध कार्य किया।अध्ययन का उद्देश्य था कि व्यंग्य परंपरा मानवीय मूल्यों के विकास में सहायक है।इस शोध में विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया।शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि हिंदी के व्यंग्य सामाजिक,राजनैतिक,आर्थिक,धार्मिक व साहित्यिक क्षेत्रो के विकास के साथ लोगों में मानवीय मूल्यों को जगाने में सहायक है।

मिश्रा (2022) ने अपने शोध प्रबंध "हिंदी व्यंग्य परम्परा में हरिशंकर परसाई का संवेदनात्मक संसार" विषय पर शोध कार्य किया। शोध के उद्देश्य थे–हरिशंकर परसाईकी अद्भुत वैचारिक क्षमता व संवेदनशीलता जो उनके व्यंग्य साहित्य में झलकती हैं, क्या यह समाज को नकारात्मकता से हटाकर सकारात्मकता की ओर ले जाती हैं। शोध में निष्कर्ष प्राप्त होता है कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य करुणा से ओत प्रोत हैं तथा समाज को एक मानवीय दिशा दिखाने में उनकीमहत्वपूर्ण भूमिका है।

पुरी (2022)ने अपने शोध शीर्षक "हरिशंकर परसाई के कथा साहित्य में यथार्थ बोध" पर अध्ययन किया।शोध का उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाईके कथा साहित्य का मानवीय एवं शैक्षिक मूल्यों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। शोध के निष्कर्ष में यह ज्ञात होता है कि इनके कथा साहित्य लोगों में मानवीय तथा शैक्षिक मूल्यों के विकास व नैतिकता का समावेश करने में काफी हद तक सहायक एवं लाभकारी हैं।

जोशी (2022) ने अपने शोध प्रबंध जिसका शीर्षक था "व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई एवं श्री लाल शुक्ल का तुलनात्मक अध्ययनकिया। जिसका उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाई तथा श्री लाल शुक्ल के व्यंग्य मानवीय मूल्यों तथा व्यक्ति की शिक्षा में किस सीमा तक उपयोगी हैं। निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वर्तमान में गिरते हुए मानवीय मूल्यों के उत्थान में इनके व्यंग्य महत्वपूर्ण रूप से प्रभावी हैं।

राघव (2022) ने "शरद जोशी के व्यंग्यात्मक निबंधों का अनुशीलन" विषय पर शोध कार्य किया। शोध का उद्देश्य था कि शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य सामाजिक,आर्थिक तथा राजनैतिक क्षेत्रो के विकास में उपयोगी हैं। इस शोध में समीक्षात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य सामाजिक,आर्थिक तथा राजनैतिक क्षेत्रो के विकास में प्रासंगिक है।

सिंह(2022) ने "प्रेमचन्द्र के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन" पर अपना शोध प्रस्तुत किया। शोध अध्ययन का उद्देश्य था कि प्रेमचन्द्र के उपन्यास सामाजिक चेतना एवं जनजागरूकता में सहायक हैं। शोध में लेख दस्तावेजी प्रमाण शोध विधि का प्रयोग किया गया है। शोध में द" ाया गया कि प्रेमचन्द्र के उपन्यास सामाजिक चेतना एवं जनजागरूकता में सहायक हैं। इनके उपन्यासों में लिखी गयी सामाजिक उत्थान की बातें वर्तमान सामाजिक परिवर्तन में आवश्यक हैं।

देवी (2022) ने "नरेन्द्र कोहली व ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्यात्मक निबंधों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया।अध्ययन का उद्देश्य था नरेन्द्र कोहली व ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्यात्मक निबंधों में शैक्षिक व साहित्यिक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना।शोध में विश्लेष्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि धर्म,समाज शिक्षा आदि के साथ साहित्य सृजन में बदलाव आया है। नरेन्द्र कोहली तथा ज्ञान चतुर्वेदी दोनों ने शिक्षा और साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा दिखने की कोशिश की है।

सेंगर (2023) ने अपना शोध "स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक चेतना के संदर्भ में हरिशंकर परसाई की व्यंग्य चेतना" प्रस्तुत किया। शोध का उद्देश्य था कि हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य साहित्य का वर्तमान सामाजिक चेतना पर प्रभाव।निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि

हरिशंकर परसाईके व्यंग्य साहित्य आधुनिक सामाजिक चेतना में प्राण का संचार करते हैं तथा मानवीय मूल्यों और कर्तव्यों के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।

चौहान (2023) ने अपने शोध प्रबंध "हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य, समय और समाज" का अध्ययन किया। शोध में शोधकर्ता ने यह उद्देश्य बनाया कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य साहित्य सामाजिक परिवर्तन लाने में उपयोगी हैं। निष्कर्ष में यह ज्ञात हुआ कि वर्तमान सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक चेतना में इनके व्यंग्य उपयोगी होंगे।

साव (2023) ने "प्रेम जन्मेजय के व्यंग्य निबंधों में अभिव्यक्ति विसंगति" पर अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया। शोध अध्ययन का उद्देश्य था कि मानव चेतना पर व्यंग्य निबंधों का प्रभाव पड़ता है।शोध में लेख दस्तावेजी प्रमाण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि मानवीय चेतना पर व्यंग्य निबंधों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

1.2.0 अध्ययन का औचित्य

किसी भी देश की प्रगति और विकास मुख्यतः शिक्षा के विकास और उन्नयन पर निर्भर होते हैं। जिस देश की जनता शिक्षा और उसके उपागमों को पाने में असमर्थ रहती है वह देश कभी भी विकास की ओर उन्मुख नहीं हो पाता। देश के निरन्तर उन्नयन और विकसित होने के लिए शैक्षिक मूल्यों और मानवीय मूल्यों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

व्यावसायीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने शैक्षिक मूल्यों के साथ–साथ मानवीय मूल्यों के स्वरूप को भी परिवर्तितकर दिया है। अतः इक्कोसवीं सदी में सुखद भविष्य कोसुनिश्चित करने एवं शिक्षा में व्यावसायीकरण की प्रक्रिया को रोकने के लिए शैक्षिक मूल्यों एवं मानवीय मूल्यों की सहायता लेना आवश्यकहै।नई शिक्षा नीति 1986 में भी यह स्वीकार किया गया है कि आवश्यक मूल्यों के पुर्नस्थापन तथा समाज में बढ़ रही कटुता के प्रति अधिक चिंता के कारण सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा को एक सशक्त साधन बनाने हेतु पाठ्यक्रम में इन्हें पुनः

समायोजित करने कीआवश्यकता परिलक्षित है।

निरन्तर बदलते हुए वैज्ञानिक युग में शिक्षा की परिभाषा भी बदल गयी है। विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों व शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है।शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों का सम्मान करना छोड़ दिया है तथां शिक्षा ग्रहण में प्रति वे लगातार उदासीन होते जा रहे हैं।उनम नैतिक,मानवीय,सामाजिक व शैक्षिक मूल्यों का लगातार ह्रास होता जा रहा है जो समाज तथा देश के लिए बहुत ही घातक है।इसलिए समाज तथा राष्ट्र को विकसित बनाने के लिए विद्यार्थियों में शैक्षणिक एवं मानवीय मूल्यों का समावेश आवश्यक है।

हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंग्यात्मक लेखों के माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था कोआइना दिखाया है, जहाँ व्यंग्य शैक्षणिक प्रक्रिया की विसंगतियों, मिथ्याचरों और पाखण्डों पर कुठाराघात करते हैंवहीं ये जीवन के प्रति दायित्वों का अनुभव करात है।

हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्यों के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था के स्वरूप को सामाजिकता की धरती पर उतारा है और समाज के बदलावों को नई दृष्टि देने का प्रयास किया है। भारत में विसंगतिपूर्ण, भ्रष्टाचारी, व्यावसायिक, किकर्तव्यविमूढ़ शैक्षिक मापदण्डों को हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्यों के माध्यम से बदलने के संकेत दिये हैं। हरिशंकर परसाई ने शैक्षणिक दलबन्दी,शिक्षण प्रक्रिया की असमानता,गिरते हुए मानवीय मूल्य, सामाजिक शैक्षिक विषमतायें, शिक्षा में धार्मिक भावनाएँ और सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया के व्यावसायीकरण की प्रवृत्ति पर कुठाराघात करते हुए चेतना जागत करने का प्रयास किया है।

हरिशंकर परसाई ने अपने जीवन में ऊँच–नीच, अच्छे–बुरे तथा सभी भावात्मक जिम्मेदारियों का बोझ उठाया इसीलिए उन्होंने उस समय के समाज में व्याप्त विसंगतियों को आधार बनाकर साहित्यिक रचनाएँ की।इन्हीं रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समाज के मुँह पर अपनी उगलियों की छाप छोडो और यही से व्यंग्यकार के रूप में हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व हमारे सम्मुख आया।

हरिशंकर परसाई ने अपने साहित्य में व्यंग्य का आधार किसी कल्पनालोक की दुनिया को नहीं बनाया, अपितु वे यथार्थ की जमीन पर रहते हुए साहित्य के ताने–बाने को बुनते रहे। उन तानों बानों में मानवीय मूल्यों का सार साफ दिखाई देता है।हरिशंकर परसाई के हर व्यंग्य में व्यक्ति अपने आपको नये रूप में पाता है। उनके व्यंग्य लोगों में मानवीय मूल्यों को जगाने में तत्पर हैं। इन मूल्यों के आधार पर व्यक्ति नये अन्दाज में सोचता हैं व नवीन दृष्टिकोण अपनाता हैं और यही दृष्टिकोण हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करता है, जिस प्रकार लोग मन्त्रमुग्ध होकर हरिशंकर परसाई कीरचनाओं में निहित मानवीय मूल्यों को अपने निजी जीवन में अपनाते हैं वह व्यक्ति अपने जीवन में क्या करना चाह रहा है। उस कार्य में वह सफलता भी प्राप्त करता है।

इसी प्रकार से व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्वों से दूर होकर सब ठीक हैं, सब ठीक है– का नारा लगाता हैं तथा मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं को किसी कोने में सुला देता है। इसी सोये हुए मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं को हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंग्य के माध्यम से यथार्थ की जमीन पर ला पटका जहाँ पर मानव कल्याण निहित है।हरिशंकर परसाईसामाजिक व्यंग्यों में मानवीय मूल्यों की बात अपने आप में विशिष्टता लिए हुए है।शोधार्थी ने भी इन्हीं मानवीय मूल्योंकीउपयोगिता पर वर्तमान शोधकार्य में प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में यह जानकारी मिलती है कि समाज में कहाँ पर विसंगति, अन्याय, मिथ्याचार, शोषण, ढोंगी, भ्रष्टाचार और पाखण्ड आदि है।वे कोशिश करते हैं इन सभी को दूर कर लोगों के अन्दर मानवीय मूल्यों की स्थापना की जाय जिससे समाज में भाईचारा,प्रेम ,सहानुभूति,दयालुता, परोपकार इत्यादि का भाव लाया जा सके ।

हरिशंकर परसाई के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि उनकी रचनाओ में वर्णित विसंगतियों में काल्पनिक विसंगतियाँ नहीं, अपितु जीवन की समीक्षात्मक विसंगतियाँ हैं। उनके सम्बन्ध में प्रो० राधामोहन शर्मा का वक्तव्य है–हरिशंकर परसाई

का व्यंग्य अमरता नहीं जिजीविषा का हिमायती है। उनमें सूक्ष्मग्राहिता,मानवीय मूल्य,संवेदनशीलता तथा जीवन के बहुआयामी पक्षों को उद्घाटित करने की अमर क्षमता है। हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य में अद्भुत विविधता है। उसमें शासन, धर्म, शिक्षा, सामाजिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, साहित्य,मानवीय मूल्य आदि क्षेत्रों में फैली विसंगतियों को नष्ट करने की क्षमता है।इस प्रकार हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित मानवीय मूल्य वर्तमान समय के लोगों एवं समाज के उत्थान के लिए अतिआवश्यक है।इसमें निहित मानवीय मूल्य जनमानस के कल्याण के लिए जरूरी है।इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित मानवीय मूल्यों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता का अध्ययन करना उचित समझा।

अतः वर्तमान परिदृश्य में हरिशंकर परसाईके व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यबहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक दिखते हैं। इसलिए शोधकर्ताने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आने वाली गिरावट एवं लोगों में कम होते मानवीय मूल्योको देखते हुए इस शोधकार्य का चुनाव किया है।

1.3.0 समस्या कथन

हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन

1.4.0 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

1.4.1 व्यंग्यात्मक रचना–

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जिसमें उपहास, मजाक (लुत्फ) और इसी क्रम में आलोचना का प्रभाव रहता है। व्यंगात्मक रचनाओं के द्वारा साहित्यकार समाज को नये मार्ग का अवबोध कराते हैं। व्यंग्य के द्वारा सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे हमारे समाज को विकास की एक स्वस्थ दिशा मिल सके।हमारे साहित्य में व्यंग्य रुपी विधा द्वारा व्यंग्यकारों ने लोगों के अन्दर सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों के साथ–साथ शैक्षिक मूल्यों का समावेश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ह।

1.4.2 मूल्य बोध

यह किसी वस्तु की केन्द्रीय गुणवत्ता का सूचक है। मूल्य शब्द का सामान्य अर्थ है किसी भी वस्तु के गुणों को मापने की कसौटो। वी. आई. लेनिन के अनुसार– प्राथमिक रूप में एक वस्तु मानव की आवश्यकता को सन्तुष्ट करती है, गौण रूप में एक वस्तु को दूसरी वस्तु के लिए बदला जा सकता है। एक वस्तु की उपयोगिता ही उपयोगी मूल्य का निर्माण करती है। ऐसी कोई भी वस्तु मूल्य हो सकती है जो जीवन को आगे बढ़ाती और सुरक्षित भी कराती है। सभी प्रकार के मूल्य मूलतः जीवन के साथ ही संबंध रखते हैं तथा मनुष्य का यही चिंतन उसका मूल्य बोध कहलाता है।

1.4.3 शैक्षिक मूल्य

वे सभी गतिविधियाँ जो शैक्षिक दृष्टि से अच्छी, उपयोगी और मूल्यवान हैं, शैक्षिक मूल्य मानी जाती हैं। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा की प्रकृति को संशोधित करना है, न कि केवल एक निश्चित मात्रा में ज्ञान की आपूर्ति करना।शिक्षा मानव के व्यक्तिगत विकास, सामाजिक विकास व राष्ट्रीय विकास हेतु एक सशक्त हथियार है, जहाँ की शिक्षा का स्तर जितना उच्च होगा वह देशविकास की ऊँचाईयों पर उतने ही अधिक स्तर पर पहुँचेगा।शैक्षिक मूल्यों द्वारा व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास करता है तथा समाज में स्वयं को स्थापित करके समाज के उत्थान में अपना सहयोग देता है।शैक्षिक मूल्यों के आधार पर विद्यार्थी अपने भावी जीवन को भी सार्थक बनाते हैं।कुछ शैक्षिक मूल्य निम्नवत हैं –

- **शिक्षा**– शिक्षा ज्ञान,सदाचार,उचित आचरण,तकनीकी शिक्षा, तकनीकी दक्षता,विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं।
- **अनुशासन**– अनुशासन वह आत्म–नियंत्रण है जो नियमों या आदेशों का पालन करने की आवश्यकता से प्राप्त होता है, और किसी कठिन चीज पर काम करते रहने की क्षमता होती है।
- **स्त्री शिक्षा**– स्त्री शिक्षा स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषो की ही तरह शामिल

करने से सम्बन्धित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को सन्दर्भित करता है।

- **धार्मिक शिक्षा**– धार्मिक शिक्षा प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पढ़ाया जाने वाला एक विषय है जिसका उद्देश्य बच्चों में दुनिया के धर्मों के बारे में समझ विकसित करना है। धार्मिक शिक्षा के माध्यम से, बच्चे विभिन्न धर्मों और उनकी परंपराओं, प्रथाओं और मान्यताओं के बारे में सीखेंगे।

- **जनसाधारण की शिक्षा**– शिक्षा का प्रचार प्रसार समाज के प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक व्यक्ति तक होयही जनसाधारण की शिक्षा कहलाती है ।

- **व्यावसायिक शिक्षा**– व्यावसायिक शिक्षा में विद्यार्थियों को व्यापार के आधारभूत सिद्धान्तों तथा प्रक्रियाओं का शिक्षण किया जाता है। तथा ऐसी शिक्षा एवं प्रशिक्षण से तात्पर्य है जो कार्यकर्ता को अपने कार्य म निपुण बनाती है।

1.4.4 मानवीय मूल्य–

मानवीय मूल्य से तात्पर्य दया, करुणा, सहयोग, भातृत्व, सामंजस्य, सादगी, मितव्ययिता, सह अस्तित्व की भावना एवं प्रेम का होना आदिहै। इसकेअन्तर्गत दरिद्रों व असहायों की निःस्वार्थ भाव से सेवा, समाज में अपनी स्थिति को बढ़ाने के लिए उत्साह आदि की भावनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।मानवीय मूल्य वे मूल्य हैं जो हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और परिभाषित करते हैं कि हम जीवन में कैसे कार्य करते हैं। ये मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे बताते हैं कि हम कौन हैं और वे ही जीवन में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हमारे द्वारा धारण किए गए मूल्य यह निर्धारित करते हैं कि हम क्या बनना चाहते हैं, साथ ही हम अपना जीवन कैसे जीते हैं और हम रोजमर्रा के आधार पर क्या निर्णय लेते हैं। इन मूल्यों के बिना, हमारा जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है और हम जो कुछ भी करते या कहते हैं उसका कोई अर्थ नहों रह जाता है।कुछ मानवीयमूल्य निम्नवत हैं –

- **दया**– दया संकट में पड़े लोगों के प्रति दयालु व्यवहार है, खासकर जब उन्हें

दंडित करना या नुकसान पहुंचाना किसी की शक्ति में हो।

- **करुणा**–करुणा किसी अन्य की पीड़ा को महसूस कर उसकी सहायता की इच्छा उत्पन्न होने की भावना है। करूणा स्नेहपूर्वक किया गया उपकार है।
- **सहयोग**–सहयोग एक कार्य को पूरा करने या लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दो या दो से अधिक लोगों, संस्थाओं या संगठनों की एक साथ काम करने की प्रक्रिया है।
- **सौन्दय**– सौन्दर्य को सामान्यतः वस्तुओं की एक वैशिष्ट्य के रूप में वर्णित किया जाता है जो इन वस्तुओं को देखने में आनन्ददायक बनाता है।
- **सादगी**– सादगी सरल होने की अवस्था या गुणवत्ता हैं। यदि कुछ समझने या समझाने में आसान होता है, वह सरल लगता हैइसके विपरीत कुछ जटिल हो तो सादगी भरा नहीं रहता।
- **प्रेम**– प्रेम एक एहसास है, जो दिमाग से नहीं दिल से होता है और इसमें अनेक भावनाओं व अलग अलग विचारो का समावेश होता है। प्रेम स्नेह से लेकर खुशी की ओर धीरे धीरे अग्रसर होता है। ये एक मजबूत आकर्षण और निजी जुड़ाव की भावना है जो सब भूलकर उसके साथ जाने को प्रेरित करती है।

1.4.5 प्रासंगिकता

प्रासंगिकता से तात्पर्य हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों सम्बन्धी विचारों की वर्तमान समय में एवं वर्तमान शिक्षा के महत्त्व एवं उपयोग से है अर्थात् वह विचार आदि वर्तमान समय में उपयोगी एवं महत्वपूर्ण एवं समीचीन है तो उसे प्रासंगिक मानेंगे।

1.5.0 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया–

1. हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित मूल्यबोध का अध्ययन करना।

2. हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।

3. हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना।

4. हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

1.6.0.शोध की प्रक्रिया एवं प्रविधि

प्रस्तुत शोध का विषय शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित है। अतः शोधार्थी ने अपने अध्ययनमें लेख दस्तावेजी प्रमाण विधि, वर्णनात्मक विधि एवं समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने हरिशंकर परसाईकेशैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों काअध्ययन करविश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया है। हरिशंकर परसाईकेशैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों को वर्तमान समय में व्याख्या करते समय वर्णनात्मक एवं समीक्षात्मक विधि का भी शोधार्थी द्वारा प्रयोग कियागया है।शोध की व्याख्या में शोधार्थी द्वाराहरिशंकर परसाईके चयनित साहित्य काविषय वस्तु विश्लेषण भी किया गया है।

1.7.0. शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहितशैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों की वर्तमान में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता पर आधारितहै। प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित पक्ष निम्नांकित है जिन पर ध्यान केन्द्रित किया गया है– शिक्षा, अनुशासन, स्त्री शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, जन साधारण की शिक्षा, शिक्षा का माध्यम, गुरू शिष्य सम्बन्ध, व्यावसायिक शिक्षा,राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता तथा मानवीय मूल्य में दया, करुणा, सहयोग, सौन्दर्य, मातृत्व, सामंजस्य, सादगी,मितव्ययिता, सह–अस्तित्व की भावना एवं प्रेम इत्यादि का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने हरिशंकर परसाई की रानी नागफनी की कहानी,विकलांग श्रद्धा का दौर,प्राइवेट कॉलेज का घोषणा पत्र,सदाचार का

ताबीज,विकलांग राजनीति, मध्यमवर्गीय कुत्ता, अपनी–अपनी बीमारी, ठिठुरता हुआ गणतंत्र का अध्ययन किया है और इन्ही व्यंग्यात्मक रचनाओं तकशोधार्थीसीमित है।यह अध्ययन हरिशंकर परसाईकी रचनाओं में निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्यों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता तक सीमित है।

1.8.0. शोध के निष्कर्ष

वर्तमान समय में जब शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का निरंतर ह्रास होता जा रहा है तथा शिक्षा के मूल्यों को उच्च स्तर पर लाने के अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का मूल्यों के प्रति रुझान जानना तथा उनका मूल्यों के संरक्षण सम्बन्धी प्रयासों का पता लगाना भी आवश्यक है क्योंकि शिक्षक ही शैक्षिक मूल्यों में सुधार व उसके समुचित प्रयोग के लिए काफी हद तक उत्तरदायी हैं। शिक्षा मानव विकास एवं प्रगति का सशक्त माध्यम है तथा यह मानव के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। इसके अतिरिक्त यह शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के संरक्षण तथा मानव जीवन में इसके अनुप्रयोग की दिशा तय करती है। इस पूरे शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। हरिशंकर परसाईके इनसाहित्यिकव्यंग्यो में निहित शिक्षा के परिप्रेक्ष में शैक्षिक व मानवीय मूल्यों का योगदान मनुष्य के जीवन में बहुत जरुरी है। शोधकर्ता द्वारा हरिशंकर परसाईके साहित्यिक व्यंग्यों को वर्तमान समाज में मानव के मानसिक विकास हेतु अनुप्रयोग में लाने हेतु चर्चा की है। इनके व्यंग्यो को विद्यार्थियों के शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के चतुर्दिक विकास से भी जोड़ने का प्रयास शोधकर्ता द्वारा किया गया है। हरिशंकर परसाईने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में व्याप्त बुराइयों तथा समस्याओं पर अपनी लेखन शैली द्वारा करारा प्रहार किया है तथा यह बताने कि कोशिश की है कि समाज में किस–किस प्रकार के लोग हैं जो अपने निजी स्वार्थ के कारण समाज व राष्ट्र के विकास में बाधा खड़ी करते रहते हैं। हमारे समाज तथा वातावरण में कुछ ऐसे भी जीव निवास करते है जिनका केवल व केवल कार्य समाज में विघटन पैदा करना है। वे समाज तथा व्यक्ति विशेष की प्रगति देख ही नही सकते ह। प्रस्तुत शोध में भी शोधकर्ता द्वारा इन्ही बुराइयों काहरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में देखने का प्रयास किया गया है।इसके द्वारा जनमानस में जागरूकता लायी जा सके एवं समाज तथा राष्ट्र को प्रगति के पथ

पर अग्रसर किया जा सके।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में आधुनिक समाज में व्याप्त समस्याओं की झलक मिलती है। हरिशंकर परसाईके ये व्यंग्य समाज में फैली विसंगतियों को अपने मूल रूप में लाने का एक प्रयास है, जिसके आधार पर समाज का कायापलट किया जा सके। इन्होंने सामाजिक विसंगतिया, आडम्बरों, रूढ़ियों इत्यादि को उजागर करने के लिए व्यंग्य किया है जिससे कि सामाजिक जागरूकता लायी जा सके। उनके विषय में यह कहना ठीक ही होगा कि हरिशंकर परसाई में एक डाक्टर की सतर्कता है जो रोगग्रस्त समाज से पूरी गहराई से हमदर्दी रखता है परन्तु शल्यचिकित्सा से एक सीमा तक जिसे निर्मम होना पड़ता है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्य वाणी द्वारा समाज को एक नवीन दिशा दिखाने की बात कहो है जहाँ सभी मनुष्य एक साथ रहते हुए अपने जीवन को सुखमय तरीके से जी सके। प्रारम्भ में हरिशंकर परसाईकेवल मनोरजन के लिए ही अपनी रचनाएँ करते थे परन्तु बाद में उन्होंने समाज की भलाई के लिए अपने लेखनी को एक नई दिशा दी जिसके द्वार वे समाज के उत्थान में योगदान दे सके। उनका मानना था कि व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, यह विसंगतियों, मिथ्याचारों तथा पाखंडों का पर्दाफाश करता है। वेमानव जाति की कारुणिक दशा को देखकर अत्यंत दुखी थे। उन्होंने इस स्थिति के लिए जिम्मेदार शोषक वर्ग पर अपने व्यंग्य का तीखा प्रहार किया परिणामस्वरूप उनका व्यंग्य जनमानस में उत्तेजना तथा आक्रोश भरने में समर्थ हुआ ।

उद्देश्य 1–हरिशंकर परसाई की व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित मूल्यबोध का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन में पाया कि हरिशंकर परसाईने समाज में स्वयं कोउपेक्षित महसूस किया परन्तु वे कभी भी विचलित नही हुए बल्कि अपने पूरे सामर्थ्य के अनुसार समाज मेंस्वयं कोप्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने जीवन में दुःख तथा निराशा के क्षणों में भी स्वयं को टूटने नहीं दिया बल्कि स्वयं को जनमानस से जोड़ दिया। उनके एक साक्षात्कार से पता चलता है कि अपने स्वयं के भीतर छिपे दुःखों से छुटकारा पाने के लिए अपने अन्दर उत्साह का संचार किया तथा उस समय

के सामाजिक आन्दोलन में शामिल हो गये। अपनी आत्मकथा में भी उन्होंने लिखा है कि मुक्ति अकेले नही होती और न ही अपना भला अकेले हो सकता है। मनुष्य मुक्ति तथा न्याय के लिए परेशान रहता है। हरिशंकर परसाईके व्यंग्यो में मूल्य बोध की भी झलक मिलती है जिसके द्वारा मनुश्य अपने कार्यों को सही तथा उचित दिशा में प्रयोग करके अपना,समाज तथा राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

1. अपने व्यंग्यों के माध्यम से इन्होने जनमानस के मूल्य बोध को जागृत करने का प्रयास किया क्योंकि इन्ही मूल्यों के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन को आनंदमयी बना सकता ह तथा अपने आने वाली पीढ़ी में नई चेतना का विकास कर सकता है।

2. हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्यों के द्वारा समाज के हर वर्ग की कलई खोली और समाज को प्रगति व विकास की एक स्वस्थ दिशा देने का प्रयास किया है। हरिशंकर परसाईनेअपने व्यंग्य की लेखन सामग्री के द्वारा लोगों के मूल्य बोध पर प्रकाश डाला है।

3. हरिशंकर परसाईका विचार है कि मूल्य बोध का व्यक्ति के जीवन शैली में समावेश जरुरी है, क्योंकि इन मूल्यों के बिना मनुष्य का जीवन अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता है और अपने विकास का मार्ग भी प्रशस्त नहीं कर सकता है।

4. नागफनी की कहानी व्यंग्य द्वारा हरिशंकर परसाईने मूल्य बोध का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि अध्यापक बहुत ही कम वेतन पाता है परन्तु वह अपने सेवा,काम तथा त्याग की भावना से शिक्षा के स्तर को बढ़ा देता है ।

5. विकलांग राजनीति नामक व्यंग्य द्वारा हरिशंकर परसाईने मूल्य बोध का शानदार चित्रण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि राजनीति से जुड़े लोगों ने अपना स्तर इतना नीचे गिरा दिया है की उनमें अमानवता की बू आने लगी है जो आज के समाज के विकास में नुकसानदायक है।

उद्देश्य 2–हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।

शैक्षिक मूल्यों के साथ–साथ हरिशंकर परसाईने समाज में व्याप्त पूंजीवादी व्यवस्था पर भी व्यंग्य किया है। उनका मानना है कि इन व्यवस्थाओं में सामाजिक तथा आर्थिक विषमतायें होती हैं जो मानव जीवन को और कठिन बना देती हैं। सामाजिक विषमतायें जैसे– धर्म, जाति, राजनीति, शिक्षा, व्यापार, प्रेम विवाह इत्यादि इन सभी पर हरिशंकर परसाईने अपनी बातों को व्यक्त किया है। उनका विचार था कि यह सभी विषमतायें मनुष्य की अज्ञानता के कारण होती हैं जिनका निराकरण शिक्षा के द्वारा ही संभव है। इसी को देखते हुए उन्होंने अपने व्यंग्यों में मनुष्य के शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों को जागृत करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध में भी शोधकर्ता द्वारा इनके व्यंग्यों में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का अध्ययन किया है क्योंकि शोधकर्ता का विचार है कि साहित्य जगत से जुड़े लोगों में तथा उनकी रचनाओं में समाज के प्रति कृतज्ञता का गुण होता है तथा वे समाज के उत्थान की बात करते हैं। किसी भी समाज का विकास व उत्थान वहां के निवासियों तथा उनकी शिक्षा पर आधारित होता है। यह शिक्षा व्यवस्था भी ऐसी होनी चाहिए कि जिसमे आवश्यक शैक्षिक मूल्यों का समावेश हो।

1. हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्य में डाक्टर, मजदूर, पुलिस, वकील, नेता, कार्यकर्त्ता, अफसर, पण्डे–पुजारी, किसान, पति–पत्नी, व्यापारी इत्यादि सभी प्रकार के चरित्र का वर्णन किया है। इनमें शैक्षिक मूल्यों का समावेश आवश्यक बताया है।
2. उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से सभी के चरित्र का चित्रण किया है तथा इनमें शैक्षिक मूल्यों के गुणों को उभारा है। उन्होंने शिक्षकों की भरपूर प्रशंसा करते हुए कहा है कि एक शिक्षक ही ऐसा होता है, जो निःस्वार्थ भाव से देश के भावी नागरिको को तैयार करने का कार्य करता है।
3. वह समाज के प्रति अपनी दायित्वों का निर्वाह करता है परन्तु कभो कभी आर्थिक दृष्टिसे अपने दायित्वों के निर्वाह में वह पीछे हो जाता है जिसके कारण वह ऐसी कुछ विसंगतियों में फंस जाता है कि उससे निकल नहीं पाता है।
4. हरिशंकर परसाईने शिक्षक की परिस्थितियों को उजागर करते हुए व्यंग्य किया है

कि– मुझे खुशी है कि भारतीय साहित्य की वह उज्जवल परम्परा अभी जीवित है, जिसके अनुसार कुछ लोग आज भी रात में भूंखे ही सो जाते हैं। इस समाज को धिक्कार है कि जो भारत के सपूतों को भूँखा रहने पर मजबूर कर देता है।

5. रानी नागफनी की कहानी नामक व्यंग्य में हरिशंकर परसाईने शैक्षिक मूल्यों की व्याख्या करते हुए विद्यार्थियों की मेहनत और ईमानदारी पर भी प्रहार किया है कि जिस तरह से विद्यार्थी पढने से बचने के लिए परीक्षा से पूर्व ही प्रश्नपत्र प्राप्त करने के लिए हजारों तरह के हथकण्डे अपनाते हैं ताकि उन्हीं प्रश्नों को रटकर परीक्षा दे दें, जो प्रश्नपत्र में पूछे जायेंगे। उनके अन्दर अपने विषय के प्रति गम्भीरता तथा कुछ नया जानने की उत्कण्ठा नहीं है, जो कि एक विद्याथी के लिए अपेक्षित है। हरिशंकर परसाईइसी पर आगे व्यंग्य करते हैं कि समिति की एक सिफारिश यह भी है कि प्रश्नपत्र वर्ष के आरम्भ में ही विद्यार्थियों को देने चाहिए। ऐसा करने से वे मन लगाकर पढ़ेंगे, क्योंकि वे जानते हैं कि यही प्रश्न परीक्षा में पूछे जायेंगे। अभी वे मन लगाकर इसलिए नहीं पढ़ते कि उन्हें क्या पता परीक्षा में क्या आ जाय।

6. विकलांग श्रद्धा का दौर नामक व्यंग्य में भारत की गरीब जनता को जहाँ एक तरफ दो वक्त की रोटी और शिक्षा भी नहीं मिलती, वही दूसरी तरफ धार्मिक उत्सव के नाम पर अपनी प्रतिष्ठा के झूठे लोभ के वशीभृत ऐसे लोग भी हैं, जो पैसे को पानी की तरह बहाते हैं। एक तरफ धन की ये बर्बादी और दूसरी तरफ भुखमरी एवं अशिक्षा का नग्न ताण्डव। यह विसंगति नहीं तो और क्या है इसी विसंगति को बड़ी मार्मिकता के साथ हरिशंकर परसाईने अपनी इस रचना में प्रस्तुत किया है। इस व्यग्य में शैक्षिक मूल्यों की अभिव्यक्ति झलकती है।

इस प्रकार हरिशंकर परसाईने अपने साहित्यिक व्यंग्यों में शैक्षिक मूल्यों का बेहतरीन चित्रण प्रस्तुत किया है। इनके व्यंग्यों में एक बात और सामने आती है कि कोई भी साहित्यकार कितना भी बड़ा विद्वान हो जाय यदि उसने लोगो के शैक्षिक मूल्यों के प्रति अपनी बात नही कि तो उसकी रचना का अनुप्रयोग कहीं से भी समीचीन नहीं होगा।

उद्देश्य 3–हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना।

हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्य विचारों के माध्यम से लोगों के शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के साथ–साथ भ्रष्टाचार पर भी करारा प्रहार किया है। उन्होंने अपने व्यंग्यों में भुखमरी, शोषण व शासन की नीतियों की विवेचना की है। इन्होने जनमानस का ध्यान समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर किया है और बताया है कि इस समस्या से समाज पूरी तरह दूशित है। इस समस्या का निराकरण बहुत ही आवश्यक है। इस प्रकार देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि हरिशंकर परसाईके व्यंग्य तथा सामाजिक मूल्य एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं।

1. उनके व्यंग्यों के भाव मनुष्य के मानवीय मूल्यों के विकास के लिए लाभदायक हैं और इनके व्यंग्यों को मनुष्य अपने मानवीय मूल्यों के विकास में प्रयोग कर सकता है।

2. शोधकर्ता द्वारा अपने इस शोध में हरिशंकर परसाईके विचारों व व्यंग्यों का मानव जीवन से जोड़ा गया तथा यह बतलाया गया कि इनके व्यंग्य किस सीमा तक व्यक्ति के मानवीय मूल्यों के विकास में सहायक हैं। इन्ही मूल्यों का अध्ययन करके शोधकर्ता ने इसे आम जनमानस के लिए उपयोगी बताया है।

3. शोधकर्ता द्वारा ने इनके व्यंग्यो को मानव के विचारों से जोड़कर मानव को समाज का एक उत्तरदायी नागरिक बनने का अवसर दिया है। शोधकर्ता का यह प्रयास रहा कि हरिशंकर परसाईके इन व्यंग्यरुपी रचनाओं का व्यक्ति के मानवीय मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

4. वर्तमान समय में शिक्षा के केंद्र असामाजिकता तथा अव्यवस्था के केंद्र बिंदु हो गये है, जहाँ शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया की जगह राजनीति और अन्य समाज विरोधी प्रक्रियाओं ने ले ली है। इन समस्याओं को दूर करने और पठन–पाठन की क्रियाओं को लागू करने के लिए शिक्षका व विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है।

5. आज के विद्यालयी वातावरण ने शैक्षिक प्रक्रियाओं की धार को कुंद कर दिया है

जिसका नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर देखने को मिल रहा है। इसका दुष्परिणाम यह हो रहा है कि विद्यार्थी पढने के बजाय अन्य अनर्गल कार्यों में व्यस्त रहते है, जिससे वे स्वयं व अपने परिवार,समाज तथा देश के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं। विद्यार्थी अध्ययन करने के बजाय परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए अन्य विकल्पों की तलाश में अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर रहे है। उनमें लगातार बौद्धिकहीनता बढ़ती जा रही है जिससे वे अपने निश्चित लक्ष्यों से भटकते जा रहे है। विद्यार्थी समूह बिना परीक्षा के झंझट में पड़े बगैर परीक्षा पास करने के लिए गैरकानूनी तरीकों का सहारा ले रहे हैं। शोधकर्ता का मानना है कि इन सभी विडम्बनाओं से बचाव के लिए विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का समावेश आवश्यक है।

6. सदाचार की ताबीज में हरिशंकर परसाईने मानवीय मूल्यों के प्रति जनता को जागृत किया है। हरिशंकर परसाईका विचार है कि तमाम झूठे विश्वासों, मिथ्याचारों,कर्मकाण्डों,तर्कहीन धारणाओं, पाखण्डों को कण्ठ में अंगुली डाल–डालकर और पानी भरकर उल्टी करानी पड़ती है, तब धर्म की अफीम का नशा उतरता ह। अगर यह न किया जाय तो आदमी जहर से मर जाता है। जातियों के कण्ठ में भी तर्क की अंगुलियाँ डाली जाती हैं। सही विचारों का ताजा पानी उसके पेट में जबरदस्ती भरा जाता है, तब उल्टी होती है, अफीम निकलती है और जाति को होश आता है। इस प्रकार मानवीय मूल्यों का सचार वर्तमान समय में आम जनमानस के लिए आवश्यक है।

7. विकलांग राजनीति नामक व्यंग्य में हरिशंकर परसाईने मानवीय मूल्यों का बहुत ही अच्छा चित्रण किया है। उन्होंने प्रजा की दयनीय स्थिति के लिए राजनीति के ठेकेदारों को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा है कि वे उनकी धज्जियाँ उड़ाते हैं। वहीं दूसरी तरफ उन्होंने अन्याय को सहने वाली जनता को भी अपने व्यंग्य के माध्यम से दोषी ठहराते हुए तीखा प्रहार किया है। अन्याय के विरूद्ध लड़ने और सक्रियता के साथ अपना हित–अहित सोचने की नयी दृष्टि दी है। जहाँ उन्होंने बड़ी ही सहानुभूतिपूर्वक जनता के दुःख–दर्द को ह्रदय से महसूस किया है, वहीं उन्होंने दूसरी तरफ उसमानवीय मूल्य एवं शक्ति को भी उत्तेजित किया है, जहाँ

अन्याय को चुपचाप सहने वाला व्यक्ति अचानक ही आक्रामक हो उठता है और यह आक्रामकता, सक्रियता और अपने वातावरण के प्रति सचेतनता हरिशंकर परसाईके व्यंग्य लेखन में साफ झलकतो है।

उद्देश्य 4—हरिशंकर परसाईकी व्यंग्यात्मक रचनाओं में निहित शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

हरिशंकर परसाईके व्यंग्यो में भी वर्तमान समय में शिक्षालयों में विद्यमान विसंगतियों पर कुठाराघात किया गया है। इन व्यंग्य रचनाओं के विधिवत अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि—

1. इनमे निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्यों का यदि हम शिक्षा तंत्र में अनुप्रयोग करे तो शिक्षालयों की समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। शोधकर्ता द्वारा इन्ही सभी उद्‌देश्यों को ध्यान में रखते हुए हरिशंकर परसाई के व्यंग्य विचारों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में यह पाया कि इनकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्य वर्तमान समय में अत्यंत उपयोगी हैं।
2. शोधकर्ता ने आज की शिक्षा व्यवस्था में आने वाली गिरावट एवं मनुष्य में गिरते जा रहे शैक्षिक व मानवीय मूल्यों को देखते हुए हरिशंकर परसाईकी रचनाओं को इस समस्या से निजात पाने के लिए अध्ययन किया व इसमें समाहित अनेक प्रकार के व्यंग्यों से निकले हुए नैतिक तथा सामाजिक विचारों को मनुष्य के जीवन में प्रासंगिकता की बात कही ।
3. हरिशंकर परसाईने अपनी इन रचनाओं में मनुष्य के जीवन से जुडी अनेक घटनाओं का वर्णन किया है जिनमें आज के परिदृश्य में आवश्यक अनेक विशेषताओं व मूल्यों की झलक मिलती है जिनका जनमानस अपने मन—मस्तिष्क में समाहित कर अपने वर्तमान जीवन को प्रसन्न व सुखमय बना सकता है। इसके अतिरिक्त अपने समाज व देश के सवागीण विकास में भी योगदान दे सकता है।
4. हरिशंकर परसाईके व्यंग्य वर्तमान समय में विद्यार्थियों,शिक्षकों,अभिभावकों,शैक्षिक प्रशासकों तथा शिक्षा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के

सृजन में आवश्यक है। आज के व्यस्तम जीवन में व्यक्ति अपना असली रूप खोता जा रहा है। वह नैतिकता का त्याग कर अनैतिक कामों में तल्लीन है जिससे उसका सामाजिक व मानसिक पतन होता जा रहा है।वह समाज में हेय दृष्टि से देखा जा रहा है। उसका अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। इन सभी समस्याओं के निदान के लिए हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्यों की भूमिका अहम् हो सकती है।

5. आज प्रायः देखा जा रहा है कि विद्यार्थियों,शिक्षकों,अभिभावकों,शैक्षिक प्रशासकों में शैक्षिक व मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। उनमें कर्तव्यनिष्ठता,दयालुता,परोपकार,प्रेम,सहानुभूति इत्यादि गुण लुप्त होते जा रहे हैं, जिससे उनमें हीन भावना आती जा रही है। वे चाह कर भी अन्य लोगो व जीव–जंतुओं की सहायता नही कर पा रहे हैं।उनमें मानवता जैसे मूल गुणों का क्षरण होता जा रहा है। इससे मनुष्य जीते जी मृत के समान होता जा रहा है। इस प्रकार के नैतिक पतन में हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्य इनके नैतिक उत्थान में सहायक होंगें।

शोधकर्ता को आशा ही नहीं बल्कि यह पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध में प्रतिपादित सभी निष्कर्ष जनमानस के अन्दर आवश्यक परिवर्तन लाकर उनके चहुमुखी विकास में सहायक सिद्ध होंगें ।

1.9.0. शोध का शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है– मनुष्य के अन्दर शैक्षिक तथा मानवीय गुणों का समावेश करना। यदि देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्य माध्यम से इन गुणों का समावेश करने के लिए लोगों को प्रेरित किया है, क्योंकि ये गुण मानव के व्यावहारिक जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक है। उनका मानना था कि मनुष्य अपना तथा अपने आने वाली पीढ़ियों का तभी विकास कर सकता है जब उसके अन्दर शैक्षिक तथा मानवीय गुण विद्यमान होंगे। हरिशंकर परसाईके व्यंग्य मनुष्य तथा समाज में एक पथ प्रदर्शक के रूप में उपयोगी हैं। कहने को तो कहा जा सकता है कि इनके व्यंग्य मानवता को

चुभने वाले प्रतीत होते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि इन्होने अपने इन व्यंग्यो तथा रचनाओं द्वारा समाज को एक नई सकारात्मक दिशा एवं गति देने का प्रयास किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं से समाज व जनसामान्य से जुडी बहुत सी घटनाओं जिसम मानवीय संवेदना विद्यमान होती है, को उजागर करने का प्रयास किया है। उनके व्यंग्य की सजगता केवल वर्तमान के लिए ही नही उपयोगी है अपितु यह मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन तक के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। वर्तमान समय में इनके व्यंग्यों में निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्य शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों का समर्पण, विद्यार्थियों में अपने गुरुजनों के प्रति सम्मान इत्यादि भावनाओं में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। आज शैक्षिक शोधों के प्रति भावनाएं एवं शिक्षण उपागमों के स्वरूप के प्रति जो मूल्य बदल गये हैं उनको समाज एवं देश हित में लाने के लिए शैक्षिक व मानवीय मूल्यों की भूमिका अहम् है।

हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्यात्मक लेखों के माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को आइना दिखाया है, जहाँ व्यंग्य शैक्षणिक प्रक्रिया की विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों पर कुठाराघात करते है, वहीं दूसरी ओर ये व्यंग्य आम आदमी को अपने जीवन के प्रति दायित्वों का बोध भी कराते है। शिक्षा के विभिन्न उपागम तथा आयाम हैं जिनमें व्यंग्य के माध्यम से समाज की भावनाओं,व्यावसायीकरण की प्रक्रियाओं, गुरु के प्रति विद्यार्थियों के भाव का वर्तमान स्वरूप ,शिक्षण प्रक्रियाओं के माध्यम से अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति,शिक्षण एवम मानवीय मूल्यों के माध्यम से जीवन की संकल्पना, शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से सामाजिक आयामों का परिदृश्य, समानता और शिक्षा के आदर्शात्मक सम्बन्ध को दर्शाकर प्राचीन एवं आधुनिक समय में होने वाले परिवर्तनों को रखा गया है।

हरिशंकर परसाईने अपने व्यंग्यों के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था के स्वरूप को सामाजिकता की धरती पर उतारा है। इनके व्यंग्यों में निहित शैक्षिक व मानवीय मूल्य वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में अति उपयोगी है। आज के बदलते शैक्षिक स्वरूप में इन मूल्यों का समावेश संजीवनी है जिसके आधार पर हम वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूलसुधार लाकर शिक्षा को बहु आयामी बना सकते हैं। अपने व्यंग्यों के माध्यम से हरिशंकर परसाईने समाज तथा देश में व्याप्त तमाम प्रकार की समस्याओं व

असमानताओं को देखते हुए कटाक्ष किया है तथा इन्हे दूर करने के लिए शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना की बात कही है। लगभग सभी शिक्षा नीतियों में भी यह स्वीकार किया गया था की देश में शिक्षा की अविरल धारा बहाने के लिए कुछ सामाजिक,शैक्षिक तथा नैतिक मूल्यों का समावेश मनुष्य के जीवन में होना अति आवश्यक है। समाज में बढती कटुता व वैमनष्यता को समाप्त करने के लिए मूल्यों की स्थापना जरुरी है। शैक्षिक पाठ्यक्रमों को प्रभावशाली, सरल व सहज बनाने के लिए शैक्षिक व मानवीय मूल्यों का पाठ्यक्रमों में समाहित किया जाना चाहिए जिसके द्वारा मानव अपने जीवन लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सके।

विद्यार्थियों के लिए–

1. प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो द्वारा विद्यार्थियों में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का विकास करके उन्हें कुसंस्कारों व मानसिक गुलामी से बचाया जा सकता है।
2. शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नई चेतना व जोश पैदा कर सामाजिक विकृतियों, अंधविश्वासों, गैर बराबरी की स्थितियों, क्रूरता व शोषण के विरुद्ध खड़ा किया जा सकता है।
3. आज नई पीढ़ी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नित नई उपलब्धियां प्राप्त कर रही है। अनेक भौतिक उपलब्धियां प्राप्त कर अंतरिक्ष में मनुष्य भेजने की तैयारियां चल रही हैं। मनुष्य ने शिक्षा से असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, लेकिन आज हम शिक्षा में ऐसी कमी अनुभव करते हैं, जिसका निदान आवश्यक है।इस कमी का हरिशंकर परसाईके शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों के द्वारा दूर किया जा सकता है ।
4. इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा से हमने असंख्य भौतिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं, लेकिन वर्तमान संदर्भ में शैक्षिक व मानवीय मूल्यों के अभाव में f" ाक्षा मानव जीवन परंपरा व आदर्शों की उपेक्षा कर एकांगी व संवेदनहीन होती जा रही है।इसके निराकरण में हरिशंकर परसाईके शैक्षिक एवं मानवीय मूल्य कारगर सिद्ध हो सकते हैं ।
5. मूल्यों व आदर्शों के अभाव में दिशाहीन विद्यार्थी हिंसक, क्रूर व अमानवीय वृत्तियों

की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अपने महापुरुषों के संदेशों, अपनी परंपरा व आदर्शों से अनजान नई पीढ़ी बेलगाम हो रही है। हरिशंकर परसाईके शैक्षिक एवं मानवीय मूल्य विद्यार्थियों में आदर्श एवं संस्कार का संचार कर सकते हैं ।

शिक्षकों के लिए–

1. शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए आदर्श होता है। अतः शिक्षकों को अपने व्यवहार, विचार आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करनी चाहिए, जिससे वे जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का सामना कर सकें और अपने उदीयमान भविष्य का निर्माण कर सकें।इस कार्य में हरिशंकर परसाईके व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का अहम् योगदान होगा।
2. शिक्षक ही शैक्षिक क्षेत्र का आदर्श होता है इसलिए हरिशंकर परसाईके व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य शिक्षकों में साहित्यिक, नागरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण गतिविधियों का समावेश करेंगें।
3. हम कह सकते हैं कि हमारे देश का भविष्य शिक्षकों पर निर्भर करता है अतः उनमें शैक्षिक व मानवीय मूल्यों के साथ मूल्य बोध का भी समावेश होना आवश्यक है। इस प्रकार हरिशंकर परसाईके व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य शिक्षकों में इन गुणों का विकास करेंगें।
4. शिक्षकों में गरिमा, सच्चाई, निष्पक्षता,जिम्मेदारी और स्वतंत्रता की भावना का विकास करने में हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य सहायक होंगें ।
5. एक शिक्षक के लिए अपनी नौकरी की भूमिका और जिम्मेदारी के प्रति ईमानदार होना आवश्यक है। विद्यार्थी हमेशा शिक्षक का अनुसरण करते हैं और उस पर विचार करते हैं। शिक्षकों को इस बात से सावधान रहना चाहिए कि वे क्या करते हैं और यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि वे जो प्रतिबद्धताएँ व्यक्त करते हैं उन्हें पूरा किया जाए। इस कार्य में भी हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य कारगर सिद्ध होंगें।

प्रशासकों के लिए –

1. आजकल ऐसे निजी शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं, जिनका लक्ष्य केवल पैसा कमाना है, उन्हें विद्यार्थियों के भविष्य की चिंता नहीं होती। ऐसी संस्थाओं में स्तरीय व गुणवत्तायुक्त शिक्षा न मिलने पर विद्यार्थियों को रोजगार के लिए भटकना पड़ता है।इन समस्याओं के निराकरण में हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य कारगर सिद्ध होंगें।

2. शिक्षण संस्थानों की बागडोर शिक्षाविदों के हाथों में होनी चाहिए, तभी विद्यार्थी रोजगारोन्मुख शिक्षा प्राप्त कर समाज के लिए उपयोगी व बेहतर इनसान बन सकते हैं। विद्यार्थियों में मानवीय भावनाएं व संवेदनशीलता पैदा करने के लिए उन्हें भारतीय आदर्शों, शैक्षिक व मानवीय मूल्यों व संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है।

3. प्रशासकों तथा प्रधानाचार्यों को चाहिए कि शैक्षिक व मानवीय मूल्यों को खेलों व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़कर विद्यार्थियों के भावी जीवन को सही दिशा दी जा सकती है।

4. प्रशासकों तथा प्रधानाचार्यों को चाहिए कि वे अपनी संस्थाओं में हरिशंकर परसाईके शैक्षिक व मानवीय मूल्यों के आधार पर ऐसे वातावरण का विकास करें जिससे सभी विद्यार्थी अधिकतम शैक्षिक उपलब्द्धि अर्जित करते हुए अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।

5. प्रशासकों को हरिशंकर परसाईके शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों से प्रेरणा लेकर व शिक्षा के माध्यम से समाज में सामंजस्य, समन्वय, सद्भाव, सेवा, समर्पण व त्याग की भावनाएं विकसित करनी चाहिए।

प्रकाशकों के लिए–

1. वर्तमान में टीवी व सोशल मीडिया के माध्यम से फैल रही कुसंस्कृति पर अंकुश लगाकर समाज में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल दिया जाना चाहिए।

2. शिक्षा का लक्ष्य बेहतर इन्सान तैयार करना होना चाहिए। इसके लिए प्रत्येक समाचार चैनलों,अखबारों तथा सोशल मीडिया के प्रकाशकों का यह दायित्व बनता है कि वे समाज में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए इससे सम्बंधित विषय–वस्तु को प्राथमिकता पर प्रकाशित करें।

3. समाज में शैक्षिक व मानवीय मूल्यों के विकास में प्रकाशकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है इसलिए इसके प्रति इनको हमेशा सजग रहकर अपनी इस अहम् भूमिका का निर्वहन करते रहना चाहिए।

4. प्रकाशकों द्वारा अपने लेखों,सम्पादकीय,आर्टिकल इत्यादि में विद्यार्थियों में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के विकास के लिए विषय वस्तु का प्रकाशन किया जाना चाहिए।

5. शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों के प्रचार व प्रसार में प्रकाशकों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी क्योंकि इन्हीं मूल्यों के आधार पर हम अपने समाज तथा देश का चहुंमुखी विकास कर पायेंगें।

अभिभावकों के लिए –

1. अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में संस्कार का समावेश चाहते हैं जिसके लिए हरिशंकर परसाईकी व्यंग्य रचनाओं में निहित शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य कारगर सिद्ध होंगें ।

2. अभिभावकों को भी अपने जीवन में शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का समावेश करना चाहिए जिससे वे आदर्श रूप में अपने पाल्यों के समक्ष स्वयं को प्रस्तुत कर सकें।

3. अभिभावकों को अपने पाल्यों के प्रति प्रेम,ममता,स्नेह तथा विश्वास करना चाहिए जिससे उनमें सदाचार,नैतिकता इत्यादि भावनाओं का विकास किया जा सके इन सब के लिए शैक्षिक व मानवीय मूल्यों का उनके जीवन में होना आवश्यक है ।

4. भारतीय संस्कृति शैक्षिक,मानवीय व नैतिक मूल्यों को विकसित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।हरिशंकर परसाईके शैक्षिक व मानवीय मूल्य अभिभावकों में

मानवीय गुणों के विकास करने में सक्षम सिद्ध हो सकेंगें।

5. अभिभावकों के शैक्षिक तथा मानवीय मूल्यों का अनुसरण करके उनके बच्चे भी अपने अन्दर इस प्रकार के गुणों को आत्मसात करके व्यवाहारिक जीवन जीने का प्रयास करते हैं ।

1.10.0.भावी अध्ययन हेतु शैक्षिक सुझाव

इसक आधार पर भविष्य में किए जानेवाले शोध कार्यो के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

- हरिशंकर परसाई का साहित्य : एक शैक्षिक रचना पर शोध कार्य किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई और उनकी साहित्यिक कृतियों में शैक्षिक योगदान पर शोध कार्य कार्य किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई एवं उनकी कृतियाँ शैक्षिक संवेदना का महाकाव्य इस पक्ष पर शोध कार्य किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई एवं उनका साहित्य वर्तमान युग की एक शैक्षिक विवेचना इस पर शोध कार्य किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई के साहित्य का शैक्षिक अनुशीलन पर शोध कार्य किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई कृत साहित्य एक संसार पर अध्ययन किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं शैक्षिक दर्शन का अध्ययन किया जा सकता हैं।
- वर्तमान सन्दर्भ में हरिशंकर परसाई के शैक्षिक विचारों का योगदान पर शोध कार्य किया जा सकता हैं।
- हरिशंकर परसाई का शिक्षा दर्शन पर शोध कार्य किया जा सकता हैं।

- बाबू बाल मुकुंद गुप्त की साहित्यिक कृतियों का शिक्षा में योगदान पर शोध कार्यकिया जा सकता है।
- चंद्रधर शर्मा गुलेरी के व्यंग्यों में मानवीय तथाशैक्षिक मूल्यों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर शोध कार्य किया जा सकता है।
- शरद जोशी के शैक्षिक विचारों का आधुनिक समय में उपयोगिता विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है।
- के० पी० सक्सेना के हास्य व्यंग्यों का मानव जीवन के विविध पहलुओं के विकास में योगदान विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है।
- अलोक पुराणिक के शिक्षा दर्शन का आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता पर शोध कार्य किया जा सकता है।
- ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्यों में निहित शैक्षिक विचारों के महत्व एवं उपयोगिता पर शोध अध्ययन किया जा सकता है।

12—ग्रन्थ सन्दर्भ—सूची

परसाई, हरिशंकर (1994). ऐसा भी सोचा जाता है, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण

परसाई, हरिशंकर (1983). दो नाक वाले लोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली प्र.सं

परसाई,हरिशंकर (1976). वैष्णव की फिसलन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.

परसाई,हरिशंकर (1978). तिरछी रेखाए, संभावना प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण

परसाई,हरिशंकर(1978). ठिठुरता हुआ गणतंत्र,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली, तृतीय संस्करण

परसाई,हरिशंकर (1975). शिकायत मुझे भी है,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण

परसाई, हरिशंकर (1976). पगडंडियों का ज़माना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,

द्वितीय संस्करण

परसाई, हरिशंकर (1994). हम इक उम्र से वाकिफ हैं, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.

परसाई, हरिशंकर (1988). मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य–रचनाए, ज्ञान भारती प्रकाशन दिल्ली, चौथा संस्करण

प्रसाद, कमला (2000). आखन देखी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं– 1985, द्वि. संस्करण

कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, श्यामसुंदर मिश्र, मलय, श्याम कश्यप (2005). संपादक मण्डल–हरिशंकर परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम खण्ड, संस्करण

कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, श्यामसुंदर मिश्र, मलय, श्याम कश्यप (2005). संपादक मण्डल दृहरिशंकर परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, द्वितीय खण्ड, संस्करण

कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, श्यामसुंदर मिश्र, मलय, श्याम कश्यप (2005). संपादक मण्डल–हरिशंकर परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, तृतीय खण्ड, संस्करण

कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, श्यामसुंदर मिश्र, मलय, श्याम कश्यप (2005). संपादक मण्डल–हरिशंकर परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ खण्ड, संस्करण

कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, श्यामसुंदर मिश्र, मलय, श्याम कश्यप (2005). संपादक मण्डल –हरिशंकर परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, पंचम खण्ड, संस्करण

कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, श्यामसुंदर मिश्र, मलय, श्याम कश्यप (2005). संपादक मण्डल–हरिशंकर परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, षष्ठ खण्ड, संस्करण

राय, अमृत(1984). विचारधारा और साहित्य, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण

गर्ग, शेरजंग (1973). स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य, साहित्य भारती दिल्ली, प्रथम संस्करण

घोष, श्याम सुंदर (संपा)(1983). व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं.

चन्दर, सुभाष (2008). हिंदी व्यंग्य का इतिहास, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं.

चतुर्वेदी, बरसाने लाल (1977). मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाए, ज्ञान भारती प्रकाशन दिल्ली, संस्करण

जैन, कांति कुमार (2007). तुम्हारा हरिशंकर परसाई, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.

त्यागी, रवीन्द्रनाथ (2008). उर्दू–हिंदी हास्य व्यंग्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं.

तिवारी,बालेन्द्र शेखर (1978). हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं.

नन्दन, कन्हैया लाल (1973). मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य कथाए, पराग प्रकाशन, दिल्ली,

प्रसाद, कमला (2005).हरिशंकर परसाई रचनावली सभी खण्ड, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण

व्यास, मदालसा (1999). हिंदी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्र. सं.

शर्मा, राधे मोहन (1992).हरिशंकर परसाई व्यंग्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, भूमिका प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं.

सिंह, मालम (1999).हरिशंकर परसाई की सृजनात्मकता, रामकृष्ण प्रकाशन, विदिश

हरिमोहन (2005). साहित्यिक विधाए रू पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण

त्रिगुणायत, गोविन्द (1956). शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली, संस्करण

त्रिपाठी, विश्वनाथ (2007). भारतीय साहित्य के निर्माता हरिशंकर परसाई, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्र. सं.

त्रिपाठी, विश्वनाथ (2000). देश के इस दौर में, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण

गुप्ता ए०पी०(2013). अनुसंधान विधिया, प्रयागराज शारदा पुस्तक भवन।

गुप्ता, एस०पी०(2009). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, प्रयागराज, शारदा पुस्तक भण्डार, यूनिवर्सिटी रोड।

जायसवाल, राजेन्द्र(1976). मनोवैज्ञानिक मापन एवं सांख्यिकी, लखनऊ, न्यू बिल्डिंग, अमीनाबाद।

पाण्डेय के०पी०(2008). शैक्षिक अनुसंधान वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, तृतीय संस्करण।

भटनागर, आर०पी०(2007). शिक्षा अनुसंधान, मेरठ लायल बुक डिपो।

भूषण एवं कुमार (2006). शैक्षिक तकनीकी, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

राय, पी०एन०(2011). अनुसंधान परिचय, आगरा रू लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, त्रयोदश संस्करण।

आलपोर्ट, जी. डब्ल्यू (1960). स्टडी ऑफ वैल्यूज, कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी, बोस्टन

गंभीरे, अरूण (2018).हरिशंकर परसाई की निबंधों में समाज एवं धर्म विषयक व्यंग्य, एपीटोमाइण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च, वॉ0 4, इश्शू–7, पृ0 60–66

कुमार, नरेश (2017). हरिशंकर परसाई की व्यंग्य निबंधों की साहित्यिक विशेषता बी. आर.डी.यू. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलरी रिसर्च, वॉ0 2. इश्शू–3, पृ0 60–63

मिश्र, आलोक (2018).हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी की व्यंग्य यात्रा, श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वॉ0 6 इश्शू – 4, पृ0 156–15

ओबराय, डॉ० एस०सी०(2004). शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ ।

पाण्डेय, डॉ० राम शकल मिश्र एवं डॉ० करुणा शंकर (2008). मल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा ।

पाण्डेय, प्रो० संगमलाल (1991). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्टल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

पाण्डेय, रामशकल (2003). मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

परसाई, हरिशंकर (1957). वसुधा साहित्यिक मासिक पत्रिका, जबलपुर।

परसाई, हरिशंकर (1980). निठल्ले की डायरी, डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू हिन्दीवाला, डाट काम।

परसाई, हरिशंकर (1980). विकलांग श्रद्धा का दौर, राजकमल प्रकाशन इन्दौर।

पासी, राजेश (2017).हरिशंकर परसाई की व्यंग्य साहित्य में युग चेतना, इनोवेटिव द रिसर्च कन्सेप्ट, वॉ0 2, इश्शू–7, पृ० 202–211

वर्मा, ममता (2016). हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप शब्द ब्रह्म, भारतीय भाषाओं की अन्तर्राष्टोय मासिक शोध पत्रिका, वा० 4 इश्शू 12. पृ० 28–30 ।

Websites:

http://www.eric.ed.gov

http://shodhganga.inflibnet.ac.in

http://www.nuepa.org

http://www.educationindia.net